

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मंदिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा



उपलब्धियाँ | कला और संस्कृति |
शिक्षा | खेल | कार्यक्रम



0120-4545608 | WEBSITE: ssmnoida.in |

GMAIL: ssm.noida@gmail.com



विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर, सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा
मासिक ई-पत्रिका, नवंबर - 2025
ज्ञानोदय (अंक-62)



संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार

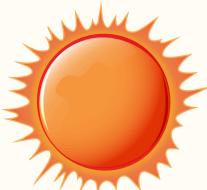
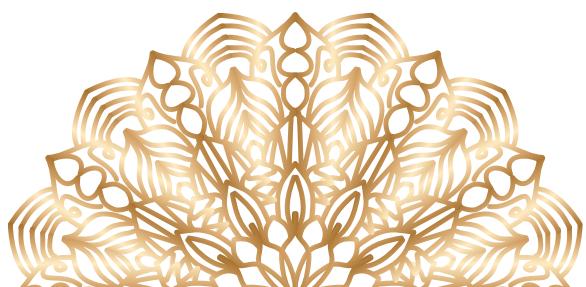


मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

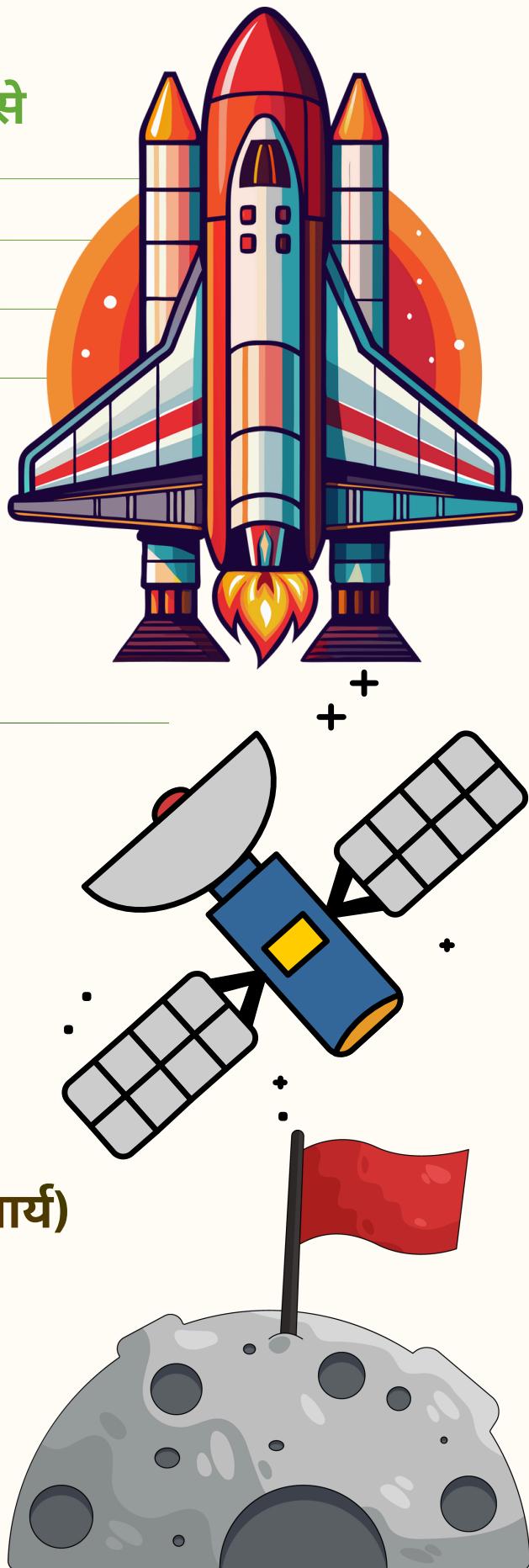
संपादक मंडल

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
श्री दीपक कुमार
श्रीमती तरुणा सक्सेना
ब० अनु सिंह
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- विश्व हिंदी दिवस
- स्वामी विवेकानंद जयंती
- राष्ट्रीय युवा दिवस
- भारतीय सेना दिवस
- सुभाष चंद्र बोस
- बसंत पंचमी
- गणतंत्र दिवस
- लाला लाजपत राय जयंती
- विज्ञान प्रदर्शनी
- जगदीश चंद्र बसु जयंती
- समर्पण निधि
- सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम
- स्वर्णप्राशन
- सुबरमण्यम भारती जयंती
- स्वास्थ्य परिक्षण शिविर
- संस्कृति ज्ञान परीक्षा (आचार्य)
- आचार्य परिक्षण
- जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी





संपादकीय

ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव



डिजिटल युग में शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। इंटरनेट और तकनीकी साधनों के विकास के साथ ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा जगत में एक नई क्रांति ला दी है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण एक प्रभावी विकल्प बनकर उभरा, जिसने विद्यार्थियों की पढ़ाई को निरंतर बनाए रखा। आज ऑनलाइन शिक्षण केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

ऑनलाइन शिक्षण का सबसे बड़ा प्रभाव इसकी सुलभता है। अब विद्यार्थी घर बैठे देश-विदेश के प्रतिष्ठित शिक्षकों और संस्थानों से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इससे भौगोलिक बाधाएँ समाप्त हुई हैं और ग्रामीण व दूरदराज़ क्षेत्रों के छात्रों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अवसर मिला है। साथ ही, रिकॉर्ड लेक्चर, ई-बुक्स और डिजिटल नोट्स के माध्यम से विद्यार्थी अपनी सुविधा अनुसार पढ़ाई कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन शिक्षण ने स्व-अध्ययन और तकनीकी दक्षता को बढ़ावा दिया है। विद्यार्थी कंप्यूटर, टैबलेट और स्मार्टफोन जैसे उपकरणों का उपयोग सीख रहे हैं, जिससे उनमें डिजिटल कौशल विकसित हो रहा है। यह कौशल भविष्य में रोजगार और करियर के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। ऑनलाइन क्लिज़, प्रेज़ेंटेशन और प्रोजेक्ट्स ने सीखने की प्रक्रिया को अधिक रोचक और इंटरएक्टिव बनाया है।

निष्कर्षतः, ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा को अधिक लचीला, सुलभ और आधुनिक बनाया है, लेकिन इसकी सफलता के लिए संतुलन आवश्यक है। यदि ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षण का समन्वय किया जाए, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए और स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाए, तो ऑनलाइन शिक्षण शिक्षा के क्षेत्र में एक सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन ला सकता है।



अनु सिंह
अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)



प्रधानाचार्य जी की कलम से



वन्दे मातरम् की गौरव गाथा

वन्दे मातरम् को भारत की शाश्वत संकल्पना बताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष पूरे होने पर वर्ष भर चलने वाले स्मरणोत्सव का शुभारंभ विशेष डाक टिकट और सिक्के के विमोचन के साथ किया।

बंकिमचंद्र चट्टर्जी के बांग्ला भाषा में लिखे उपन्यास 'आनंद मठ' से राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकारा गया यह गीत कोई मामूली गीत नहीं है। भारत को उसकी व्यापक राष्ट्रीयता की पहचान और स्वाभिमान इसी गीत से प्राप्त हुए। नागरिक सभ्यता की विरासत, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानव सेवा के मूल्यों के उत्स इसी गीत के समवेत स्वर की उपज हैं। अंग्रेजों के विरुद्ध भिन्न जातीय और धर्म-समुदायों को संगठित करने के अभियान में इसी गीत की भूमिका बुलंद थी। तय है, वंदे मातरम् क्रांति के स्वरों में नींव का पत्थर था। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की रक्त धमनियों में विद्रोह की उग्र भावना इसी गीत की देन है।

14 अगस्त 1947 की मध्य-रात्रि में जब देश आजाद हो रहा था, तब इस मंत्र-गीत का गायन श्रीमती सुचेता कृपलानी ने किया और वहां उपस्थित लोग इस गीत के सम्मान में गीत खत्म न हो जाने तक खड़े रहे। 15 अगस्त 1947 को जब स्वतंत्रता का सूर्योदय हो रहा था, तब आकाशवाणी पर पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ने इसे बड़े ही रोचक ढंग से गाया। आखिरकार 24 अगस्त 1948 को जन-गण-मन के साथ इस गीत को भी राष्ट्र गीत की प्रतिष्ठा मिली।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



विश्व मंच पर गूंजती हमारी अपनी भाषा: 'विश्व हिंदी दिवस'

हर साल 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया जाता है। यह दिन केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि दुनिया भर में फैली हमारी संस्कृति, जड़ों और भाषाई अस्मिता का उत्सव है। 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की याद में शुरू हुआ यह सफर आज हिंदी को संयुक्त राष्ट्र जैसी वैश्विक संस्थाओं की दहलीज तक ले आया है। आज हिंदी केवल भारत की सीमाओं में सिमटी भाषा नहीं है। फिजी, मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात जैसे देशों में हिंदी की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है। इंटरनेट के दौर में हिंदी ने अपनी उपस्थिति को और सशक्त किया है। आज गूगल, फेसबुक और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी सामग्री की मांग अंग्रेजी के समकक्ष खड़ी है। विश्व के सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है, जो इसकी बढ़ती स्वीकार्यता का प्रमाण है।

वैश्वीकरण के इस दौर में हिंदी 'बाजार की भाषा' बनकर उभरी है। दुनिया की बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अब समझ चुकी हैं कि भारत के विशाल बाजार तक पहुँचने के लिए हिंदी ही सबसे सशक्त माध्यम है। विज्ञापनों से लेकर मनोरंजन जगत (बॉलीवुड और ओटीटी) तक, हिंदी ने अपनी आर्थिक उपयोगिता सिद्ध की है। हालांकि हिंदी वैश्विक हो रही है, लेकिन चुनौतियां अब भी बरकरार हैं। तकनीकी शब्दावली और विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी को और अधिक सरल और सुलभ बनाने की आवश्यकता है। हमें हिंदी को केवल 'भावनाओं की भाषा' तक सीमित न रखकर 'ज्ञान और रोजगार की भाषा' बनाने की दिशा में काम करना होगा।

विश्व हिंदी दिवस हमें याद दिलाता है कि हमारी भाषा हमारी पहचान है। एक प्रवासी भारतीय के लिए हिंदी अपनी मिट्टी से जुड़ने का सूत्र है, तो एक विदेशी के लिए भारत को समझने की खिड़की। आइए, इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम हिंदी का उपयोग गर्व के साथ करेंगे और इसे विश्व की अग्रणी ज्ञान-भाषा बनाने में अपना योगदान देंगे।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"

अंजलि शर्मा (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएड्स



स्वामी विवेकानंद जयंती



युगदृष्टा, संन्यासी और राष्ट्रजागरण के अग्रदूतस्वामी विवेकानंद भारत के उन महान विचारकों में से हैं, जिन्होंने अपने ओजस्वी विचारों, आध्यात्मिक दृष्टि और कर्मप्रधान जीवन से न केवल भारत को आत्मबोध कराया, बल्कि विश्व को भारतीय संस्कृति और वेदांत का दिव्य संदेश दिया। वे केवल एक संत या संन्यासी नहीं थे, बल्कि आधुनिक भारत के निर्माता, युवाओं के पथप्रदर्शक और मानवता के सच्चे सेवक थे। उनका जीवन साहस, त्याग, ज्ञान और सेवा का अद्भुत संगम था। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ। उनका बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त एक प्रखर बुद्धि वाले वकील थे और माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक, करुणामयी तथा संस्कारवान महिला थीं। माता-पिता से प्राप्त नैतिकता, तर्कशीलता और आध्यात्मिकता ने उनके व्यक्तित्व को गहराई प्रदान की। बाल्यकाल से ही नरेन्द्रनाथ में सत्य को जानने की तीव्र जिज्ञासा थी। वे रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आए। रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें केवल ईश्वर का मार्ग ही नहीं दिखाया, बल्कि मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा मानने की प्रेरणा दी। गुरु के सान्निध्य में नरेन्द्रनाथ का जीवन रूपांतरित हो गया और वे आगे चलकर 'स्वामी विवेकानंद' बने। स्वामी विवेकानंद का सबसे ऐतिहासिक योगदान 1893 का शिकागो विश्व धर्म महासभा में दिया गया उनका भाषण है। **"Sisters and Brothers of America"** कहकर उन्होंने जब अपना भाषण प्रारंभ किया, तो पूरा सभागार तालियों से गूँज उठा। उन्होंने विश्व को सहिष्णुता, सार्वभौमिक भाईचारे और धार्मिक समन्वय का संदेश दिया। उस भाषण ने भारत को वैश्विक मंच पर गौरव प्रदान किया। स्वामी विवेकानंद का दर्शन वेदांत पर आधारित था, किंतु वह कर्म और व्यवहार से जुड़ा हुआ था। उनका स्पष्ट मत था कि केवल ध्यान और साधना से नहीं, बल्कि समाज के दुखी, निर्धन और अशिक्षित लोगों की सेवा से ही सच्ची साधना होती है। उनका प्रसिद्ध कथन—**"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए"** आज भी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने युवाओं को राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति माना। उनका विश्वास था कि यदि युवा चरित्रवान, साहसी और आत्मविश्वासी बन जाएँ, तो कोई भी राष्ट्र उन्नति से नहीं रुक सकता। वे कहते थे—“मुझे सौ ऊर्जावान युवक दे दो, मैं भारत का भाग्य बदल दूँगा।” स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य शिक्षा, सेवा और आध्यात्मिक उन्नति था।

अलका सरसेना (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा



राष्ट्रीय युवा दिवस

राष्ट्रीय युवा दिवस प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी को मनाया जाता है। यह दिन महान विचारक, दार्शनिक और युवा प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। भारत सरकार ने युवाओं को उनके विचारों से प्रेरणा देने के उद्देश्य से इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में घोषित किया। स्वामी विवेकानंद जी का मानना था कि युवा शक्ति ही किसी भी राष्ट्र की वास्तविक ताकत होती है। उन्होंने युवाओं को आत्मविश्वास, साहस, चरित्र निर्माण और सेवा भाव का संदेश दिया। उनका प्रसिद्ध कथन “उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए” आज भी युवाओं का मार्गदर्शन करता है।

राष्ट्रीय युवा दिवस का उद्देश्य युवाओं में राष्ट्र निर्माण की भावना जागृत करना, उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करना तथा उन्हें सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना है। इस दिन विद्यालयों, महाविद्यालयों और सामाजिक संस्थानों में भाषण, निबंध, पोस्टर प्रतियोगिता, सेमिनार और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आज का युवा ही कल का भविष्य है। यदि युवा शिक्षित, अनुशासित और कर्तव्यनिष्ठ होगा, तभी देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा। इसलिए राष्ट्रीय युवा दिवस हमें यह संदेश देता है कि हम स्वामी विवेकानंद जी के आदर्शों को अपनाकर एक सशक्त, आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

स्वामी विवेकानंद का संदेश:

“उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।”

ज्योति (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा



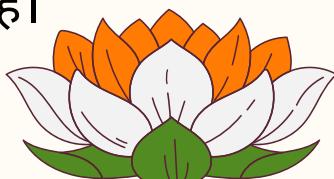
भारतीय सेना दिवस



भारतीय सेवा दिवस 15 जनवरी मनाने के पीछे एक ऐसा ऐतिहासिक महत्व है। यह दिन फील्ड मार्शल के एम करिअप्पा के सम्मान में मनाया जाता है। 15 जनवरी 1949 को भारतीय सेना की कमान के एम करिअप्पा ने संभाली थी। के एम करिअप्पा भारत के पहले सेना प्रमुख बने और उन्होंने देश की स्वतंत्रता के बाद सेना का नेतृत्व किया था। इस दिन का महत्व इस तथ्य में भी निहित है कि इस दिन भारतीय सेवा की बहादुरी और बलिदानों को याद दिलाता है। यह दिन उन सैनिकों को श्रद्धांजलि देने का अवसर है जिन्होंने देश की एकता और अखंडता के लिए अपने प्राण न्योछावर किए हैं। वर्ष 2026 में 78 वां एक भारतीय सेना दिवस पूरे देश में भव्य तरीके से मनाया जा रहा है जिसमें सेना परेड और विभिन्न समारोह आयोजित किए जाएंगे। इस दिन भारतीय सेना की बहादुरी और समर्पण को सम्मानित करने का महत्वपूर्ण अवसर है।

आधुनिक भारतीय सेना की शुरुआत 1 अप्रैल 1895 को हुई थी। उस समय इसे भारत को गुलाम बनाने वाली ब्रिटिश कंपनी ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रेसीडेंसी आर्मी के रूप में खड़ा किया था। जिसे बाद में ब्रिटिश भारतीय सेना के नाम से जाना गया। 15 जनवरी 1949 तक इसके कमांडर ब्रिटिश सैनिक अधिकारी जनरल फ्रांसिस बुचर थे। आजादी के बाद 15 जनवरी 1949 को हमें पहले भारतीय सेना प्रमुख मिले जिनका नाम फील्ड मार्शल के एम करिअप्पा था। इसीलिए 15 जनवरी को ही भारतीय सेना दिवस के रूप में मनाने का फैसला लिया गया। भारतीय सेना दिवस के अवसर पर देश भर में विभिन्न समारोह आयोजित किए जाते हैं। जिनमें सैन्य ओके परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सेना के जवानों को सम्मानित करने के कार्यक्रम शामिल हैं। सेना दिवस का मुख्य समारोह का आयोजन दिल्ली में छावनी के कार्यपा परेड ग्राउंड में होता है। जहां भारतीय सेना के जवान अपनी बहादुरी और अनुशासन का प्रदर्शन करते हैं।

हरिओम(आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा





सुभाष चंद्र बोस



सुभाष चन्द्र बोस, जिन्हें नेताजी के नाम से भी जाना जाता है। सुभाष चन्द्र बोस एक महान भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक, ओडिशा में हुआ था। इनका जन्म एक मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ था। इनके पिता जानकीनाथ बोस एक वकील थे और माता प्रभादेवी एक धार्मिक महिला थीं। सुभाष चन्द्र बोस ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कटक में पूरी की। इसके बाद उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने आगे की शिक्षा के लिए इंग्लैंड जाने का फैसला किया, जहां उन्होंने भारतीय सिविल सेवा परीक्षा पास की। सुभाष चन्द्र बोस ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे असहयोग आंदोलन में भाग लिया और कई बार जेल गए। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, सुभाष चन्द्र बोस ने जापान की मदद से आजाद हिंद फौज का गठन किया। इस सेना ने भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी।

कहा जाता है कि सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु संदेहास्पद है कुछ लोगों के अनुसार इनकी मृत्यु 18 अगस्त 1945 को एक विमान दुर्घटना में हुई थी। उनकी मृत्यु के बाद, उनकी विरासत को भारत की स्वतंत्रता के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में माना जाता है।



स्टेला गुप्ता (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा



बसंत पंचमी



या देवी सर्वभूतेषु विद्या रूपेण संस्थिता नमस्तव्ये -नमस्तव्ये,
नमस्तव्ये नमो नमः ।

बसंत पंचमी जिसे श्री पंचमी, बसन्त पंचमी भी कहा जाता है भारत का एक प्रमुख त्यौहार है यह माघ महीने की शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है । बसंत पंचमी को ऋतुराज बसंत के आगमन का प्रतीक माना जाता है । ऋतुराज बसंत का स्वागत समस्त देवी देवता गण अपने हाथ पसारकर करते हैं, प्रकृति की लाल पीली छटा दर्शनीय होती है इसी दिन ज्ञान की देवी मां सरस्वती का प्राकट्य हुआ था। देवी भागवत में उल्लेख मिलता है कि माघ शुक्ल पंचमी को संगीत ,काव्य ,कला ,शिल्प, रस, छंद ,शब्द शक्ति जिह्या को प्राप्त हुई थी । छोटे बच्चों को विद्या आरंभ कराने के लिए यह दिन शुभ माना जाता है, इस दिन विद्यार्थी मां सरस्वती की विशेष पूजा अर्चना करते हैं। अपनी पुस्तकों व वाद्य यंत्रों का पूजन करते हैं। इसी दिन वीर हकीकत राय का बलिदान दिवस है जो हमें हमारे कर्तव्यों का बोध कराता है। ऐसे पावन पर्व बसंत पंचमी पर पीले रंगों का विशेष महत्व है पीला रंग समृद्धि ,ऊर्जा और नई शुरुआत का प्रतीक है लोग इस दिन पीले वस्त्र पहनते हैं घरों में पीले पकवान मीठे चावलों से मां सरस्वती का पूजन, अर्चन करते हैं । बसंत पंचमी केवल एक धार्मिक त्योहार नहीं बल्कि प्रकृति और ज्ञान के संगम का उत्सव है यह हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ने और जीवन में नई उमंग भरने की प्रेरणा देता है अतः इस पावन पर्व पर हम सभी मां सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त करें ।

मीरा सिमल्टी (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा

गणतंत्र दिवस



भारत में गणतंत्र दिवस प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 में हमारे देश का संविधान लागू हुआ और भारत एक संपूर्ण गणतंत्र बना। इस ऐतिहासिक अवसर पर देश ने स्वयं को जनता द्वारा, जनता के लिए और जनता के शासन वाला राष्ट्र घोषित किया।

गणतंत्र दिवस का महत्व बहुत बड़ा है। यह दिन हमें हमारे संविधान के आदर्शों—न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—की याद दिलाता है। संविधान ने प्रत्येक नागरिक को अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का बोध भी कराया है। यह हमें कानून का सम्मान करने और देश की एकता व अखंडता बनाए रखने की प्रेरणा देता है। इस दिन राजधानी नई दिल्ली में भव्य गणतंत्र दिवस परेड आयोजित की जाती है। राष्ट्रपति महोदय राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं और विभिन्न राज्यों की झाँकियाँ भारत की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं। विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी ध्वजारोहण, भाषण, सांस्कृतिक कार्यक्रम और देशभक्ति गीतों का आयोजन किया जाता है।

गणतंत्र दिवस हमें देश के लिए बलिदान देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण करने का अवसर देता है। यह दिन हमें यह संकल्प दिलाता है कि हम एक जिम्मेदार नागरिक बनकर अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें और देश की प्रगति में योगदान दें। अंततः, गणतंत्र दिवस लोकतंत्र की शक्ति और संविधान की महानता का प्रतीक है, जो हमें एक सशक्त और विकसित भारत के निर्माण की प्रेरणा देता है।

गणतंत्र दिवस – संविधान का सम्मान, देश का अभिमान।

जय हिंद जय भारत ।।।



**निधि शुक्ला (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा**



लाला लाजपत राय जयंती

लाला लाजपत राय भारत के महान स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। उन्हें “पंजाब केसरी” के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के मोगा ज़िले के धुड़िके गाँव में हुआ था। वे न केवल एक निर्भीक क्रांतिकारी थे, बल्कि एक विद्वान, लेखक और समाज सुधारक भी थे।

लाला लाजपत राय ने देश की आज़ादी के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। वे लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल) की त्रिमूर्ति के प्रमुख सदस्य थे। ये तीनों नेता भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उग्र राष्ट्रवाद के प्रतीक माने जाते हैं। लाला जी स्वदेशी आंदोलन के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। दयानंद एंग्लो वैदिक (DAV) आंदोलन को आगे बढ़ाने में उनकी बड़ी भूमिका रही। उन्होंने लाहौर में नेशनल कॉलेज की स्थापना की, जहाँ भगत सिंह जैसे महान क्रांतिकारियों ने शिक्षा प्राप्त की।

1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया, तो लाला लाजपत राय ने उसके विरोध का नेतृत्व किया। लाहौर में हुए शांतिपूर्ण प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश पुलिस ने उन पर लाठीचार्ज किया। इस हमले से वे गंभीर रूप से घायल हो गए और 17 नवंबर 1928 को उनका निधन हो गया। उनका बलिदान भारतीय जनता के लिए प्रेरणा बन गया।

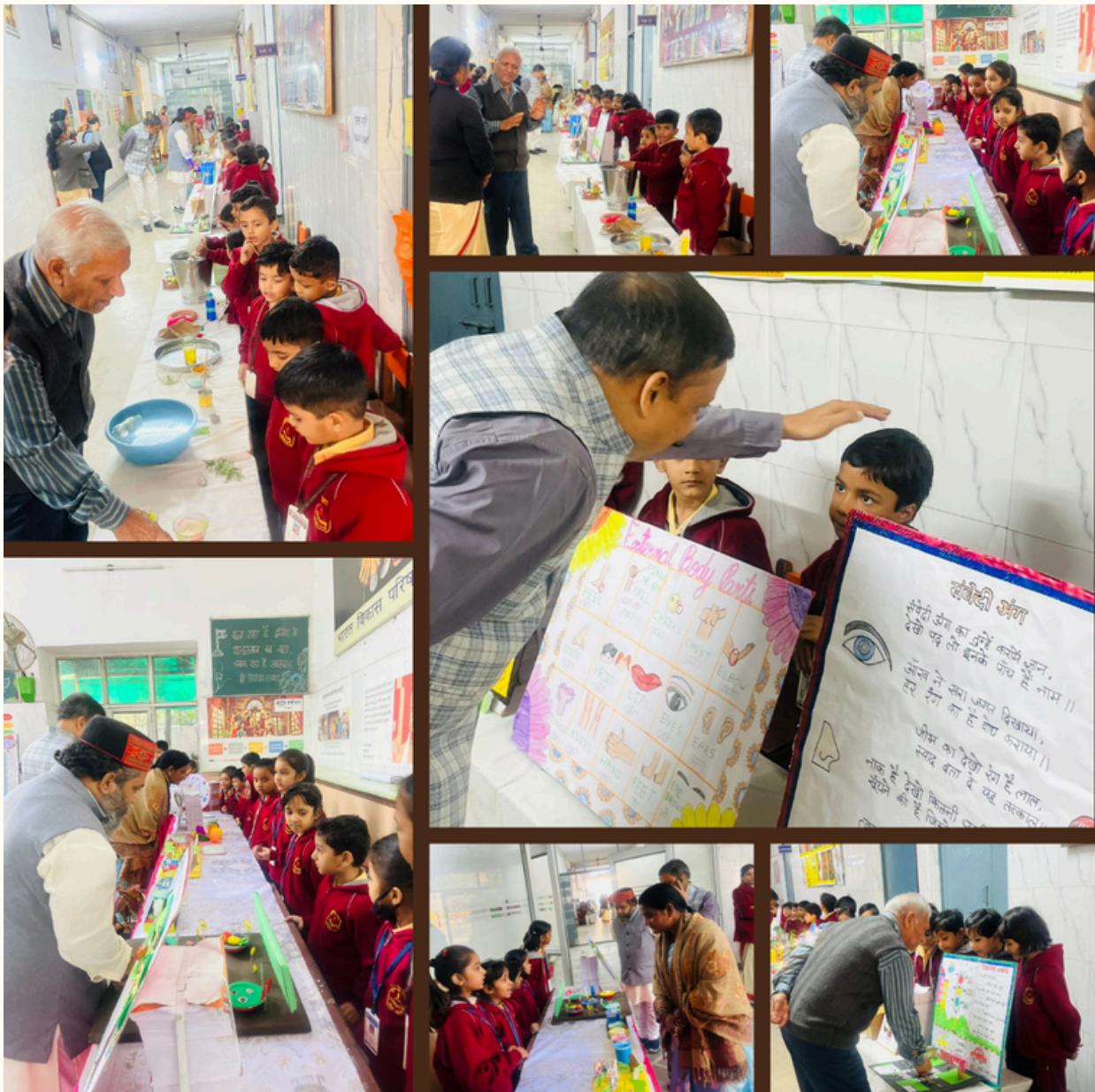
लाला लाजपत राय का जीवन साहस, त्याग और देशभक्ति का प्रतीक है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सत्य और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष ही सच्ची राष्ट्रसेवा है। आज भी उनका नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वर्णिम पन्नों में अमर है।



विनतेश सिंह (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा

विज्ञान प्रदर्शनी





सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक- 02/12/25 दिन- सोमवार को विज्ञान प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। अतिथि महोदय ने दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन कर कार्यक्रम की शुरुआत की। प्रदर्शनी का उद्देश्य भैया-बहिनों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता एवं प्रयोगात्मक सीख को प्रोत्साहित करना था। कक्षा नर्सरी से पंचम तक के भैया-बहिनों ने अपने-अपने मॉडल, प्रोजेक्ट तथा प्रयोग प्रस्तुत कर विज्ञान के प्रति गहरी रुचि और समझ का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी में ऊर्जा के स्रोत, पर्यावरण संरक्षण, जल प्रबंधन, सौर ऊर्जा, चंद्रयान 3, रोबोटिक्स, स्वास्थ्य, जलीय जंतु, ट्रैफिक लाइट, पौधों के भाग, सजीव व निर्जीव वस्तुएं, सीड जर्मिनेशन एवं स्वच्छता, सरल मशीनों जैसे विषयों पर आकर्षक एवं शिक्षाप्रद मॉडल प्रस्तुत किए गए। भैया-बहिनों के नवीन विचारों, प्रस्तुति कौशल और मेहनत ने उपस्थित सभी आचार्यों, अभिभावकों, प्रबंध समिति एवं आगंतुकों को प्रभावित किया।

जगदीश चंद्र बसु जयंती



विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में 2 दिसंबर 2025 दिन मंगलवार को सर जगदीश चंद्र बसु की जयंती मनाई गई। जयंती का शुभारंभ फोटो पर पुष्पार्चन कर किया गया। जयंती प्रमुख श्रीमती स्टेला जी ने भैया-बहिनों को सर जगदीश चंद्र बसु के जीवन परिचय से अवगत कराया एवं श्रीमती रजनी शर्मा जी ने विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान को उजागर किया। भैया-बहिनों ने एक नाटक प्रस्तुति से पौधों की सजीवता को दर्शाया।

समर्पण निधि





सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा नर्सरी से पंचम तक के समस्त भैया-बहिनों को समर्पण निधि कार्यक्रम के महत्व से अवगत कराने हेतु एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य भैया-बहिनों में सेवा, सहयोग, त्याग एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना था। कार्यक्रम से भैया-बहिनों में संवेदनशीलता, सहयोग भावना, देशप्रेम एवं सेवा भाव का विकास हुआ।

सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम





दिनांक- 06/12/2025 दिन- शनिवार को सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता साध्वी श्री कृष्णा जी ने कुटुंब प्रबोधन व पर्यावरण के संबंध में भारतीय दृष्टि पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस विषय का नारी शक्ति के जीवन में क्या महत्व है पर चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमती यमुना जी (एडवोकेट व आकाशवाणी विभाग में एनाउंसर) ने नारियों द्वारा छोटे उद्योग धंधों को कैसे विकसित किया जा सकता है का वर्णन किया। कार्यक्रम की वक्ता श्रीमती दीपिका शर्मा जी ने भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका का विषय रखा। उन्होंने बताया महिला अबला नहीं वह शक्ति है जो देश को सशक्त बनाती है। कार्यक्रम में 146 महिलाओं ने हिस्सा लिया। मातृशक्तियों ने प्रेरणादायक वीरांगनाओं के वेश को धारण कर उनके विषय में भी बताया। उन्हें विद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में प्रश्नोत्तरी सत्र का भी आयोजन किया गया तथा उत्तर देने वाली मातृशक्तियों को पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि ओल्ड एज होम NGO का कार्यभार संभालने वाली श्रीमती ऋतु वर्मा जी रही। इस कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती इंदु गुप्ता जी रहीं, कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अलका सक्सेना जी द्वारा किया गया।

स्वर्णप्राशन



दिनांक 08/12/2025 दिन- सोमवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका में भैया/बहिनों को स्वर्ण प्राशन औषधि का सेवन करवाया गया। जिसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भगवान धन्वंतरि जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया और बताया कि यह एक आयुर्वेदिक प्रक्रिया है जिसमें सोने (स्वर्ण) को जड़ी-बूटियों और शहद के साथ मिलाकर बच्चों को पिलाया जाता है। इससे भैया/बहिनों का शारीरिक और मानसिक विकास बेहतर होता है और वे बीमारियों से बचे रहते हैं।

सुब्रमण्यम भारती जयंती



दिनांक- 11/12/25 को सरस्वती शिशु, मंदिर नोएडा में महान देशभक्त, क्रांतिकारी, कवि और समाज सुधारक महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती जी की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर भारती जी की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया गया। आचार्य शिवनंदन जी ने भारती जी का जीवन परिचय देते हुए कहा कि यह “भारतीय क्रांति के गायक” और “राष्ट्रीय कवि” के नाम से जाना जाता है। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने अपने उद्घोषण में कहा कि सुब्रह्मण्यम भारती जी ने अपने लेखन से स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी। उन्होंने भैया-बहिनों को प्रेरित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को भारती जी के आदर्शों—मेहनत, आत्मविश्वास, साहस, अनुशासन और देशप्रेम—को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

स्वास्थ्य परिक्षण शिविर





दिनांक 13/12/ 25 दिन शनिवार को सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर 12 नोएडा में कक्षा अरुण से पंचम तक 520 भैया बहनों का स्वास्थ्य परीक्षण स्कूल हेल्थ सर्विस, नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन एंड विद्या भारती द्वारा किया गया। जिसमें भैया बहनों की आंखों की जांच, दांतों की जांच, कानों की जांच, बीएमआई एवं सामान्य स्वास्थ्य का परीक्षण किया गया। इस अवसर पर सेवा विभाग प्रमुख श्रीमती वंदना जैन जी, डॉ ओमप्रकाश जी, डॉ हरिओम जी, श्रेया जी, लवली कंसल जी, रतुल जी, देवराज जी, मेघा जी, मुस्कान जी, आलिया जी, नरेंद्र जी द्वारा भैया बहनों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। विद्यालय प्रबंध समिति से विद्यालय के अध्यक्ष श्री प्रदीप भारद्वाज जी, प्रबंधक श्री राजीव नायक जी, कोषाध्यक्ष श्री जितेंद्र गौतम जी, उप प्रबंधक श्री नीतीश आर्य जी, श्री कपिल देव जी उपस्थित रहे। प्रधानाचार्य देवेंद्र कुमार शर्मा जी द्वारा सभी का परिचय कराया गया एवं अध्यक्ष श्री प्रदीप भारद्वाज जी द्वारा स्वागत एवं सम्मान तथा जितेंद्र गौतम जी द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

संस्कृति ज्ञान परीक्षा (आचार्य)



दिनांक- 13/12/25 को सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय में संस्कृति बोध एवं भारतीय मूल्यों के संवर्धन के उद्देश्य से आचार्या एवं आचार्यों की संस्कृति ज्ञान परीक्षा का सफल आयोजन किया गया। इस परीक्षा में विद्यालय के कुल 58 आचार्य/आचार्या उत्साहपूर्वक उपस्थित रहे। विद्यालय प्रबंधन द्वारा इस प्रकार की गतिविधियों को निरंतर आयोजित करने का संकल्प व्यक्त किया गया, जिससे शिक्षकों के माध्यम से विद्यार्थियों में भी संस्कृति एवं संस्कारों का विकास हो सके।



आचार्य परिक्षण



दिनांक - 19 व 20 दिसंबर 2025 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दो दिवसीय आचार्य प्रशिक्षण हुआ। प्रशिक्षण के प्रथम दिवस आचार्य हरिओम जी ने पंचकोश का वर्णन किया। शिक्षकों के सर्वांगीण विकास हेतु पंचकोश – अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनन्दमय – के माध्यम से बालकों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास पर विस्तार से मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के द्वितीय दिवस पर आचार्या रजनी बिष्ट जी व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने विद्यालय में शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावी, रोचक एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने हेतु Lesson plan एवं पंचपदी शिक्षा पद्धति विषय पर एक विशेष प्रशिक्षण/कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आचार्य/आचार्याओं को सुव्यवस्थित Lesson plan निर्माण की प्रक्रिया से अवगत कराना तथा पंचपदी शिक्षा पद्धति के माध्यम से कक्षा-कक्ष में शिक्षण को सुदृढ़ बनाना है। इसे नई शिक्षा नीति (NEP 2020) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF 2023) के अनुरूप भी माना गया है।

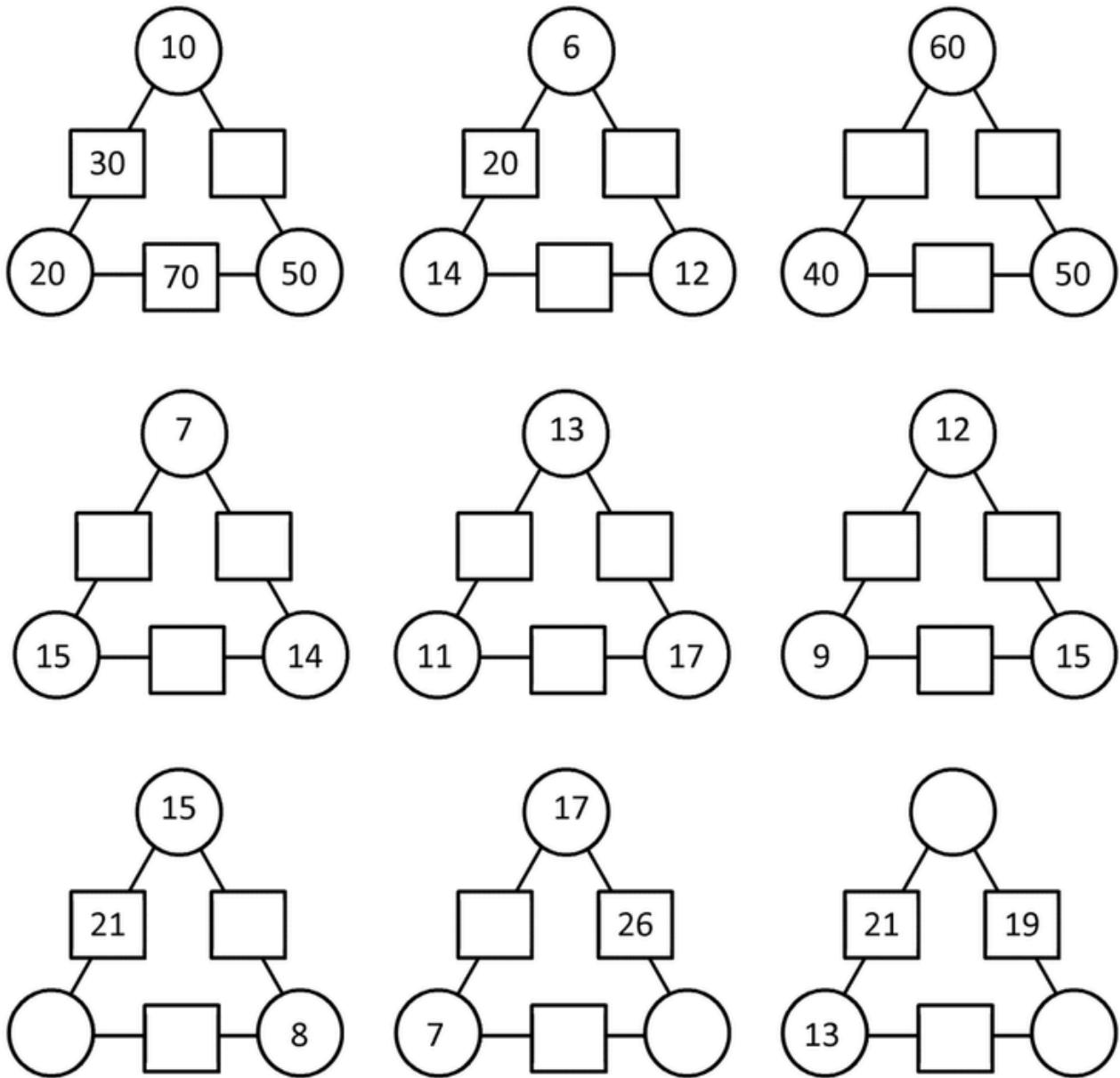
जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम



विद्यालय में मासांत दिवस के शुभ अवसर पर दिनांक 31/12/25 को प्रातः 9:30 बजे विद्यालय परिसर में समस्त स्टाफ के सहयोग से हवन-पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पावन अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी, श्रीमान प्रकाश वीर जी, श्रीमान प्रदीप भारद्वाज जी व समस्त स्टाफ ने पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति भाव से हवन में आहुति प्रदान कर विद्यालय, विद्यार्थियों एवं समाज के सर्वांगीण विकास हेतु मंगलकामनाएँ कीं।

बताओ तो जानें

The numbers in the circles added together makes the number in the linking rectangle. Find the missing numbers in this puzzle.



पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

- भारतीय सेना दिवस कब मनाया जाता है?
- 12 जनवरी को कौन सा दिवस मनाया जाता है?
- “उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए” ये किस महापुरुष का कथन है?
- विश्व हिंदी दिवस कब मनाया जाता है?
- प्रथम विश्व हिंदी सम्मलेन कहाँ पर आयोजित हुआ?
- वन्दे मातरम् को राष्ट्र गीत की प्रतिष्ठा कब मिली?
- वन्दे मातरम् किस उपन्यास से लिया गया है?
- सुभाष चन्द्र बोस के माता-पिता का नाम बताएं?
- बसंत पंचमी के दिन किस वीर बालक का बलिदान हुआ था?
- हमारे देश का सविंधान कब लागू हुआ?
- लाल बाल पाल के नाम से किन महापुरुष को जाना जाता है?
- लाला लाजपत राय निधन कब हुआ?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे ।

कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 28 व 29 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के क्वाट्सप्प पर दिनांक - 20 जनवरी 2025 तक भेजने होंगे।